ग्यारहवाँ अध्याय
अपभ्रंश : इतिहास और व्यवस्था

प्राकृत वैयाकरणों ने अपभ्रंश को प्राकृत का एक भेद माना है। काव्यालंकार की टीका में नमिसाधु ने 'प्राकृतमेवापभ्रंशः' (२।१२) अर्थात शौरसेनी, मागधी आदि की तरह अपभ्रंश को प्राकृत का एक भेद बताया है। महर्षि पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में लिखा है ''भूयांसोऽपशब्दाः अल्पीयांसः शब्दा इति। एकैकस्य हि शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशा। तद्यथा गौरित्यस्य शब्दस्य गावी गोणी गोता गोपोतलिकेत्यादयो बहवोऽपभ्रंशाः।[१]'' अर्थात् संस्कृत व्याकरण में असिद्ध शब्दों को अपभ्रंश बताया है। दण्डी ने अपने काव्यादर्श में प्राकृत और अपभ्रंश का अलग–अलग निर्देश किया है। पतञ्जलि के भाष्यवाले उपर्युक्त कथन से भी स्पष्ट है कि संस्कृत से भिन्न सभी प्राकृत भाषाएँ अपभ्रंश के अन्तर्गत हैं। उनके गावी, गोणी, गोता और गोपोतलिका आदि उदाहरण– उक्त अर्थ में ही चरितार्थ हैं।

डॉ. हार्नलि का मत है कि आर्यों की बोलचाल की भाषाएँ भारत के आदिम निवासी अनार्य लोगों की भिन्न–भिन्न भाषाओं के प्रभाव से जिन रूपान्तरों को प्राप्त हुई थीं, वे ही भिन्न–भिन्न अपभ्रंश भाषाएँ हैं और ये महाराष्ट्री की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं। सर जार्ज ग्रियर्सन प्रभृति विद्वान् डॉ. हार्नलि के मत को नहीं मानते। इनका मत है कि साहित्यिक प्राकृतों को व्याकरण के नियमों में आबद्ध हो जाने पर जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई, वे भाषाएँ अपभ्रंश कहलायीं। अपभ्रंश भाषा का साहित्य में प्रयोग ईस्वी सन् की पाँचवी शताब्दी के पहले ही होने लगा था। अपभ्रंश भाषा के बहुत भेद हैं। प्राकृत चन्द्रिका में इसके सत्ताईस भेद बतलाये गये हैं। व्राचड, लाटी, वैदर्भी, उपनागर, नागर, बार्बर, अवन्ती, पञ्चाली, टाक्क, मालवी, कैकेयी, गौडी, कौन्तली, औद्री, पाश्चात्त्या, पाण्ड्या, कौन्तली, सैंहली, कालिंगी, प्राच्या, कार्णाटी, काञ्ची, द्राविडी, गौर्जरी, आभीरी, मध्यदेशीया एवं वैतालिकी इन २७ भेदों का उल्लेख मार्कण्डेय ने भी अपने प्राकृतसर्वस्व में किया है।[२] प्रधान रूप से अपभ्रंश को नागर, उपनागर और व्राचड इन तीन भेदों में ही विभक्त किया गया है।

---

१. पातञ्जल–महाभाष्यम् (प्रदीपोद्द्योतसमन्वितम्) पृ. १७; सन् १९३५।

२. टाक्कं टक्कभाषानागरोपनागरादिभ्योऽवधारणीयम्। तु–बहुला मालवी। वाडीबहुला पाञ्चाली। उल्लप्राया वैदर्भी। संबोधनाढ्या लाटी। ईकारोकारबहुला औद्री। सवीप्सा कैकेयी। समासाढ्या गौडी। डकारबहुला कौन्तली। एकारिणी च पाण्ड्या। युक्ताढ्या

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

आचार्य हेमचन्द्र ने सामान्य अपभ्रंश के नाम से अनुशासनसम्बन्धी नियम लिखे हैं। अत: इस प्रकरण में मी सामान्य अपभ्रंश के अनुशासन सम्बन्धी नियम दिये जाते हैं।

(१) अपभ्रंश में अ, इ, उ, ऍ और ओं ये पाँच ह्रस्व स्वर और आ, ई, ऊ, ए और ओ ये पाँच दीर्घ स्वर माने गये हैं। ऋ, ॡ, ऐ और औ का अभाव है।

(२) ऋ स्वर के स्थान पर अपभ्रंश में अ, इ, उ, आ, ए, और रि आदेश हो जाता है। कुछ स्थानों में ऋ ज्यों का त्यों भी पाया जाता है। यथा–

ऋ = अ	तणु < तृण, पट्ठि < पृष्ठ, कच्चु < कृत्य
ऋ = आ	काच्चु < कृत्य;
ऋ = इ	तिणु < तृण, पिट्ठि < पृष्ठ।
ऋ = उ	पुट्ठि < पृष्ठ
ऋ = ए	गेह < गृह
ऋ = रि, री	रिण < ऋण; रिसहो < ऋषभ; रीछ < ऋच्छ

(३) ॡ के स्थान पर अपभ्रंश में इ और इलि आदेश होता है। यथा– किन्नो, किलिन्नो < क्लृन्न।

(४) ऐ के स्थान पर अपभ्रंश में ऍ, ए और अइ तथा औ के स्थान पर ओं, ओ और अउ आदेश होते हैं। यथा–

ऐ = ऍ	अवरेंक < अपरैक
ऐ = ए	देव < दैव
ऐ = अइ	दइअ < दैव
औ = ओ	गोरी < गौरी
औ = ओं	जोंव्वण < यौवन
औ = अउ	पउर < पौर, गउरी < गौरी

(५) अपभ्रंश में पद के अन्त में स्थित उं, हुँ, हिं और हं का भी लघु–ह्रस्व उच्चारण होता है। यथा–

(क) अन्नु जु तुच्छउं ते धनहे!

(ख) दइवु घटावइ वणि तरहुं।

(ग) तणहुँ तइज्जी भंगि नवि।

सैंहली। हिंयुक्ता कालिङ्गी। प्राच्या तद्वेशीयभाषाढ्या। ज (भ) ट्टादिबहुला आभीरी। वर्णविपर्ययात् कार्णाटी। मध्यदेशीया तद्वेशीयाढ्या। संस्कृताढ्या च गौर्जरी। चकारात् पूर्वोक्तढक्कभाषाग्रहणम्। रत (ल) हभां व्यत्ययेन पाश्चात्त्या। रेफव्यत्ययेन द्राविडी। ढकारबहुला वैतालिकी। एओबहुला काञ्ची।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(६) अपभ्रंश में एक स्वर के स्थान पर प्रायः दूसरा स्वर हो जाता है।[१] यथा–

अ = इ	किविण < कृपण।
अ = उ	मुणइ < मनुते।
अ = ए	वेल्लि < वल्ली।
आ = अ	सीय < सीता।
आ = उ	उल्ल < आर्द्र।
आ = ए	देइ < दा, लेइ < ला, मेत्त < मात्र।
इ = अ	पडिवत्त < प्रतिपत्ति।
इ = ए	बेल्ल < बिल्व, एत्था < इत्थु।
ई = अ	हरडइ < हरीतिकी।
ई = आ	कम्हार < काश्मीर।
ई = ऊ	विहूण < विहीन।
ई = ए	एरिस < ईदृश। वेण < वीणा।
ई = ऍ	खेॅडुअ < क्रीडा।
उ = अ	मउड < मुकुट; बाह < बाहु; सउमार <सुकुमार।
उ = इ	पुरिस < पुरुष।
उ = ओॅ	मोॅग्गर < मुद्गर, पोॅत्थय < पुस्तक; कोॅतत < कुन्त।
ऊ = ए	नेउर < नूपुर।
ऊ = ओ	मोॅल्ल < मूल्य।
ऊ = ओ	थोर < स्थूल; तांबोल < ताम्बूल।
ए = इ, ई, ए	लिह, लीह, लेह < लेखा।

(७) अपभ्रंश में स्वादि विभक्तियों के आने पर प्रायः कभी तो प्रतिपादिक के अन्त्य स्वर का दीर्घ और कभी ह्रस्व हो जाता है। यथा–

ढोला सामला < विट श्यामलः–विट में रहने वाले अ को ढोला में दीर्घ कर दिया है। सामला में भी ल को दीर्घ हुआ है।

धण < धन्या –दीर्घ को ह्रस्व हुआ है।

सुवण्णरेह < सुवर्णरेखा– दीर्घ को ह्रस्व हुआ है।

विट्टीए < पुत्रि–स्त्रीलिंग में ह्रस्व का दीर्घ हुआ है।

पइट्ठि < प्रविष्टा–स्त्रीलिंग में दीर्घ का ह्रस्व हुआ है।

निसिआ खग्ग < निशिता खड्गा ,, ,,

---

१. स्वराणां स्वराः प्रायोपभ्रंशे ८।४।३२९ हे.। २. स्यादौ दीर्घ-ह्रस्वौ ८।४।३३०।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(८) अनुस्वारयुक्त ह्रस्व स्वर के आगे र, श, ष, स और ह हो तो ह्रस्व को दीर्घ और अनुस्वार का लोप हो जाता है। यथा–

बीस < विंशति; सीह < सिंह।

(९) अपभ्रंश में छन्द के कारण ह्रस्व को दीर्घ और दीर्घ को ह्रस्व हो जाता है। कई स्थानों पर ह्रस्व को दीर्घ न करके अनुस्वार कर देते हैं।

दंसण < दर्शन।

फंस < स्पर्श।

अंसु < अश्रु।

व्यञ्जनविकार

सामान्यतः शब्द के आदि व्यञ्जन में विकार नहीं होता। पर ऐसे भी कुछ अपवाद हैं जिनमें आदि व्यञ्जन में परिवर्तन पाया जाता है। यथा–

दिट्ठि < धृति–यहाँ शब्द के आदि ध के स्थान पर द हो गया है।

धुअ या धुआ < दुहिता–शब्द के आदि व्यञ्जन ध के स्थान पर द हुआ है।

यादि < जाति–शब्द के आदि में ज के स्थान पर अपभ्रंश में य होता है।

(१०) अपभ्रंश में पद के आदि में वर्तमान किन्तु स्वर से पर में आने वाले और असंयुक्त क, ख, त, थ, प और फ वर्णों के स्थान में प्रायः ग, घ, द, ध, ब और भ होते हैं।[१] यथा–

पिअमाणुसविच्छोहगरु < प्रियमनुष्यविक्षोभकरम्–क के स्थान पर ग।

सुघिँ चिन्तिज्जइ माणु < सुखं चिन्त्यते मानः–ख के स्थान पर घ।

कधिदु < कथितम्–थ के स्थान पर ध और त के स्थान पर द।

सबधु < शपथम्–प के स्थान पर ब और थ के स्थान पर ध।

सभलउ < सफलम्–फ के स्थान पर भ।

(११) कुछ शब्दों में अपभ्रंश में दो स्वरों के बीच में स्थित ख, घ, थ, ध, फ और भ को ह होता है। यथा–

साहा < शाखा–तालव्य श के स्थान पर स और ख को ह।

पहुल < पृथुल–पकारोत्तर ऋ को अकार और थ के स्थान पर ह।

अहर < अधर–ध के स्थान पर ह।

मुत्ताहल < मुक्ताफल–संयुक्त क् का लोप, त् को द्वित्व और फ को ह।

(१२) अपभ्रंश में प्राकृत के समान ट के स्थान पर ड, ढ के स्थान पर ठ और प के स्थान पर व होता है। यथा–

---

१. अनादौ स्वरादसंयुक्तानां क–ख–त–थ–प–फां ग–घ–द–ध–ब–भाः ८।४।३९६।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

तड < तट, कवड < कपट, सुहड < सुभट–ट के स्थान में ड हुआ है।

मढ < मठ, वीढ < पीठ–ठ के स्थान पर ढ हुआ है।

दीव < द्वीप, पाव < पाप–प के स्थान पर व हुआ है।

(१३) अपभ्रंश में कुछ शब्दों में अल्पप्राण वर्णों के स्थान पर महाप्राण वर्ण हो जाते हैं।

खेलइ < क्रीडति, खप्पर < कर्पर, नोक्खि < नवक्की–अल्पप्राण क के स्थान पर महाप्राण ख हुआ है।

भारथ < भारत, वसथि < वसति–अल्पप्राण त के स्थान पर थ हुआ है।

फंसइ <स्पृशति, फरसु <परशु–अल्पप्राण प के स्थान पर महाप्राण फ हुआ है।

(१४) अपभ्रंश में दन्त्य व्यञ्जनों में मूर्धन्य व्यञ्जन हो जाते हैं। यथा–

पडिउ < पतित–त दन्त्य वर्ण के स्थान पर मूर्धन्य ड हुआ है।

पडाय < पताका– ,, ,, और क के स्थान पर य।

गंठिपाल < ग्रन्थिपाल–थ के स्थान पर ठ हुआ है।

डहइ < दहति–दन्त्य द के स्थान पर मूर्धन्य ड हुआ है।

खुडिय < क्षुधित–दन्त्य ध के स्थान पर मूर्धन्य ड हुआ है।

डोलइ < दोलायते–,, द के ,, ,,

डुक्कर < दुष्कर–,, ,, ,,

वियउढ < विदुग्ध–दन्त्य ध के स्थान पर मूर्धन्य ढ हुआ है।

(१५) अपभ्रंश में पद के आदि में अवर्तमान असंयुक्त मकार के स्थान में विकल्प से अनुनासिक वकार होता है।[१] यथा–

कवँलु < कमलम्–म के स्थान में विकल्प से सानुनासिक वँ हुआ है।

भवँरु < भ्रमरः– ,, ,,

जिवँ < जिम– ,, ,,

तिवँ < तिम– ,, ,,

(१६) अपभ्रंश में संयोग के बाद में आने वाले रेफ का विकल्प से लुक् होता है।[२] यथा–

जइ केवँइ पावीसु पिउ < यदि कथञ्चित् प्राप्स्यामि प्रियम्–संयुक्त रेफ का लोप हुआ।

(१७) अपभ्रंश में कहीं–कहीं सर्वथा अविद्यमान रेफ भी होता देखा जाता है।[३] यथा–

---

१. मोऽनुनासिको वो वा ८।४।३९७। २. वाधो रो लुक् ८।४।३९८।

३. अभूतोऽपि क्वचित् ८।४।३९९।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

व्रासु महारिसि एउं भणइ < व्यासो महर्षिः एतद् भणति।

बहुल रूप में कहने से नियम की प्रवृत्ति नहीं भी पायी जाती है। यथा–

वासेण वि भारहखम्भि बद्ध < व्यासेनापि भारतस्तम्भे बद्धम्।

(१८) अपभ्रंश में प्राकृत के म्ह के स्थान में विकल्प से म्भ आदेश होता है। यथा–

गिम्भो < गिम्हो–प्राकृत के म्ह के स्थान पर म्भ आदेश हुआ है।

अभिप्राय यह है कि संस्कृत के क्ष्म, श्म, ष्म, स्म और म्ह के स्थान पर प्राकृत में म्ह आदेश होता है और प्राकृत के इस म्ह के स्थान पर अपभ्रंश में म्भ आदेश हो जाता है। यथा–

संस्कृत ब्रह्म का प्राकृत में बम्ह रूप बनता है और इस बम्ह का अपभ्रंश में बम्भ बन जाता है।

अपभ्रंश में स्वरों के बीच में स्थित छ को च्छ होता है। यथा–

विच्छ < वृक्ष–क्ष के स्थान पर छ और छ को च्छ हुआ है।

(१९) अपभ्रंश में ड, त और र के स्थान पर क्वचित् ल होता है। यथा–

ड = ल–कील < क्रीडा, सोलस < षोडश, तलाउ < तडाग, नियल < निगड, पीलिय < पीडित–ड के स्थान पर ल हुआ है।

त = ल–अलसी < अतसी, विज्जुलिया < विद्युतिका।

र = ल–चलण < चरण।

य = ज–जमुना < यमुना; जसु < यस्य।

व=य–पयट्ट <प्रवृत्त–व के स्थान पर य, ऋ को अ, प्र को प और त्त को ट्ट।

ष = छ–छ < षट्–षट् के स्थान पर छ।

ष = ह–पाहान <पाषाण–प के स्थान पर ह हुआ है।

(२०) अपभ्रंश में संयुक्त व्यञ्जन परिवर्तन सम्बन्धी नियम प्रायः प्राकृत के ही समान हैं। कुछ स्थानों में विशेषताएँ पायी जाती हैं।

(२१) आदि संयुक्त व्यञ्जन में यदि दूसरा व्यञ्जन य, र, ल और व हो तो उसका लोप हो जाता है। यथा–

जोइसिउ < ज्योतिषी–य का लोप, मध्यवर्ती त का लोप, इ स्वर शेष, ष को स और विभक्ति प्रत्यय उ।

वावारउ < व्यापार–यकार का लोप, य को व और विभक्ति का प्रत्यय उ।

वामोह < व्यामोह–य का लोप।

कील < क्रीड़ा–र का लोप और ड को ल।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पउ < प्रिय–र का लोप और य को उ।

पेम्म < प्रेम– ,, ,,

सर < स्वर–व का लोप।

दीव < द्वीप– ,, और प को व।

(२२) अपभ्रंश में प्राकृत के समान त्य के स्थान पर च्च, थ्य के स्थान पर च्छ और द्य के स्थान पर ज्ज आदेश होता है। यथा–

अच्चंत < अत्यन्त–त्य के स्थान पर च्च।

मिच्छत्त < मिथ्यात्व–थ्य के स्थान पर च्छ।

अज्जु < अद्य–द्य के स्थान पर ज्ज।

(२३) अपभ्रंश में क्ष के स्थान पर ख, छ, झ, घ, क्ख और ह आदेश होते हैं। यथा–

खार < क्षार; खवण < क्षपण–क्ष के स्थान पर ख।

छण < क्षण–प्राकृत के समान क्ष के स्थान पर छ।

झिज्जइ < क्षीयते–क्ष के स्थान पर झ आदेश।

कडक्ख < कटाक्ष–ट को ड और क्ष को क्ख आदेश हुआ है।

निहित्त <निक्षिप्त–क्ष के स्थान पर ह और संयुक्त प का लोप और त को द्वित्व।

अपभ्रंश में वर्णागम, वर्णविपर्यय (Metathesis), वर्णलोप और स्वरभक्ति आदि भी उपलब्ध हैं।

(२४) वर्णागम में स्वर या व्यञ्जन का आदि, मध्य और अन्त्य स्थान में आगम होता है। यथा–

इत्थी < स्त्री–स्त्री का त्थी हो जाता है और आदि में इ स्वर का आगम हो जाने से इत्थी पद बनता है।

व्रासु < व्यास–मध्य में र व्यञ्जन का आगम हुआ है।

मध्य में स्वर के आगम को स्वरभक्ति (Anaptysix) कहा जाता है। यथा–

समासण < श्मशान–पृथक्करण होकर मध्य में आकार का आगम हुआ है।

सलहइ < श्लाघते–पृथक्करण होकर अ स्वर का मध्य में आगम हुआ है।

दीहर < दीर्घ– ,, ,, ,,

(२५) स्वर भक्ति का एक भेद अपनिहिती (Epenthesis) है; जिस शब्द के अन्त में इ, उ, ए और ओ में से कोई एक हो तो बीच में इ या उ का आगम हो जाता है तथा तृतीय स्वर भी परिवर्तित हो जाता है। यथा–

बेल्लि < बल्लि–बल्ल + इ–इस स्थिति में ल्ल के पहले इ का आगम होने पर ब + इ + ल्ल् + इ = बेल्लि–पूर्ववर्ती इ का अ के साथ गुण हुआ है।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अपभ्रंश में वर्णविपर्यय (Metathesis) के भी उदाहरण पाये जाते हैं। यथा–

हर < गृह–वर्णविपर्यय।

रहस < हर्ष– ,,

वर्णविकार में समीकरण (Assamilation) और विषयी (Disassamilation) के भी उदाहरण मिलते हैं। यथा–

जुत्त < युक्त–य के स्थान पर ज और त के संयोग से क ध्वनि भी त में परिवर्तित है।

रत्त < रक्त–त के संयोग से क् ध्वनि त् में परिवर्तित है।

सद्द < शब्द–द के संयोग से ब् ध्वनि द में परिवर्तित है।

अग्गि < अग्नि–ग के संयोग से न ध्वनि ग में परिवर्तित।

सवत्ति < सपत्नी–प को व और त के संयोग से न ध्वनि त में परिवर्तित।

वर्णलोप में भी आदि, मध्य और अन्त्य वर्ण का लोप होता है। यथा–

वि < अपि–आदि स्वर का लोप (Aphaerasis)

रण्ण < अरण्य– ,, ,,

पोप्फल < पूगफल–मध्य वर्ण का लोप (Syncope)

भविसत्तकहा < भविष्यदत्तकथा–यहाँ अक्षर लोप (Haplology) है।

शब्दरूपावलि

(२६) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के एकवचन में अकारान्त शब्दों के अन्तिम अ को उ होता है।[१] यथा–

दहमुहु < दसमुखः–स को ह और ख को ह; प्रथमा एकवचन में उ विभक्तिचिह्न।

तोसिअ-संकरु < तोषित-शंकरः–प्रथमा एकवचन में उ विभक्तिचिह्न।

चउमुहु < चतुर्मुखम्–द्वितीया के एकवचन में उ विभक्तिचिह्न।

छमुहु < षण्मुखम्–षट् के स्थान पर छ और द्वितीया के एकवचन में उ विभक्तिचिह्न।

जिणु < जिनः–प्रथमा के एकवचन में उ विभक्तिचिह्न।

(२७) अपभ्रंश में पुल्लिङ्ग में वर्तमान अकारान्त शब्दों के प्रथमा के एकवचन में विकल्प से अन्तिम अ के स्थान में ओ होता है।[२] यथा–

जो < यः–य के स्थान पर ज और विभक्ति प्रत्यय ओ।

सो < सः –विभक्ति प्रत्यय ओ जोड़ा गया है।

---

१. स्यमोरस्योत् ८।४।३३१; २. सौ पुंस्योद्वा ८।४।३३२।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(२८) अपभ्रंश में तृतीया विभक्ति के एकवचन में अन्तिम अ के स्थान पर ए हो जाता है।[१] यथा–

पवसन्ते < प्रवसता–तृतीया के एकवचन में अ को ए हुआ है।

नहे < नखेन– ,, ,, ,, ,,

अपभ्रंश में तृतीया एकवचन में ण और अनुस्वार दोनों होते हैं। अतः तृतीया एकवचन में तीन रूप बनते हैं। यथा–

देवे, देवें, देवेण < देवेन।

(२९) अपभ्रंश में शब्द के अन्त्य अकार और ङि–सप्तमी एकवचन के स्थान में इकार और एकार होते हैं।[२] यथा–

तलि धल्लइ, तले धल्लइ < तले क्षिपति।

(३०) अपभ्रंश में तृतीया विभक्ति के बहुवचन में अन्त्य अकार के स्थान में विकल्प से एकार आदेश होता है और हिं प्रत्यय जुड़ जाता है।[३] यथा–

लक्खेहिं, गुणहिं < लक्षैः, गुणैः।

(३१) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों से पञ्चमी विभक्ति के एकवचन में हे और हु प्रत्यय जोड़े जाते हैं।[४] यथा–

वच्छहे गृण्हइ < वृक्षात् गृह्णाति–हे प्रत्यय जुड़ने से।

वच्छहु गृण्हइ < वृक्षात् गृह्णाति–हु प्रत्यय जुड़ने से।

(३२) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों में पञ्चमी विभक्ति के बहुवचन में हुं प्रत्यय जोड़ा जाता है।[५]

यथा–गिरिसिंगहुं < गिरिशृंगेभ्यः।

(३३) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों से पर में आने वाले षष्ठी के बहुवचन में सु, हो और स्सु ये तीन प्रत्यय होते हैं।[६] यथा–

तसु < तस्य– सु प्रत्यय जोड़ा गया है।

दुल्लहहो < दुर्लभस्य– हो ,, ,,

सुअणस्सु < सुजनस्य–स्सु प्रत्यय जोड़ा जाता है।

(३४) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों से पर में आने वाली षष्ठी विभिक्ति के बहुवचन में हं प्रत्यय जोड़ा जाता है।[७] यथा–

---

१. एहि ८।४।३३३। २. ङिएनेच्च ८।४।३३४।
३. भिस्येद्वा ८।४।३३५। ४. ङसेर्हेहू ८।४।३३६।
५. भ्यसो हुं ८।४।३३७। ६. ङसः सु-हो-स्सवः ८।४।३३८।
७. आमो हं ८।४।३३९।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

तणहं < तृणानाम्–ऋकार का अ होकर तण शब्द बना है, इसमें षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में हं प्रत्यय जोड़ दिया गया है।

(३५) अपभ्रंश में इकारान्त और उकारान्त शब्दों से पर में आने वाले आम् प्रत्यय–षष्ठी के बहुवचन में हुं और हं दोनों आदेश होते हैं।[१] यथा–

सउणिहं < शकुनीनाम्–षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में हं प्रत्यय होता है।

सप्तमी विभक्ति बहुवचन में भी हुं प्रत्यय होता है। यथा–

दुहुं < द्वयोः–

(३६) अपभ्रंश में इकारान्त और उकारान्त शब्दों से पञ्चमी के एकवचन, पञ्चमी बहुवचन और सप्तमी के एकवचन में क्रमशः हे, हुं और हि आदेश होते हैं।[२] यथा–

गिरिहे < गिरेः–गिरि + ङे = गिरि + हे = गिरिहे।

तरुहे < तरोः–तरु + ङे = तरु + हे = तरुहे।

तरुहुं < तरुभ्यः–तरु + भ्यस् = तरु + हुं = तरुहुं।

कलिहि < कलौ–कलि + ङि = कलि + हि = कलिहि।

(३७) अपभ्रंश में इकारान्त और उकारान्त शब्दों से तृतीया विभक्ति के एकवचन में एं, ण और अनुस्वार आदेश होते हैं।[३] यथा–

अग्गिएं < अग्निना–अग्गि + एं = अग्गिएं।

अग्गिणं < अग्निना–अग्गि + णं = अग्गिणं।

अग्गिं < अग्निना–अग्गि + म् = अग्गिं।

(३८) अपभ्रंश में सु, अम्, जस् और शस् विभक्तियों का लोप हो जाता है।[४] यथा–

एइ ति घोडा < एते ते घोटकाः–जस् का लोप।

वालइ वग्ग < वालयति वल्गाम्–अम् का लोप।

अपभ्रंश में षष्ठी विभक्ति का प्रायः लुक् हो जाता है।[५] यथा–

गय कुम्भइं दारन्तु < गजानां कुम्भान् दारयन्तम्।

(३९) अपभ्रंश में यदि किसी शब्द के सम्बोधन में जस् विभक्ति आयी हो तो उसके स्थान में हो आदेश होता है।[६] यथा–

तरुणहो, तरुणिहो <हे तरुणाः, हे तरुण्यः–जस् के स्थान में हो आदेश हुआ है।

---

१. हुं चेदुद्भ्याम् ८।४।३४०।
२. ङसि-भ्यस्-ङीनां हे-हुं-हयः ८।४।३४१।
३. एं चेदुतः ८।४।३४३।
४. स्यम्जस्शसां लुक् ८।४।३४४।
५. षष्ठ्याः ८।४।३४५।
६. आमन्त्र्ये जसो होः ८।४।३४६।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अपभ्रंश में भिस् और सुप् के स्थान में हिं आदेश होता है।[१] यथा–

गुणहिं < गुणैः, मग्गेहिं तिहिं < मार्गेषु त्रिषु।

(४०) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में वर्तमान शब्द से पर में आने वाले जस् और शस् के स्थान में उ और ओ आदेश होते हैं।[२] यथा–

अंगुलिउ < अङ्गुल्यः–यहाँ जस् के स्थान में उ हुआ है।

सव्वंगाउ < सर्वाङ्गी–यहाँ शस् के स्थान में उ हुआ है।

विलासिणीओ < विलासिनीः–शस् के स्थान पर ओ हुआ है।

(४१) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में वर्तमान शब्द से पर में आने वाले ङस् (षष्ठी एकवचन) और ङसि (पञ्चमी एकवचन) के स्थान में हे आदेश होता है।[३] यथा–

मज्झहे < मध्यायाः–पञ्चमी के एकवचन में हे प्रत्यय आदेश हुआ है।

तहे < तस्याः–षष्ठी के एकवचन में हे प्रत्यय आदेश हुआ है।

धणहे < धन्यायाः–पञ्चमी के एकवचन में हे आदेश।

बालहे < बालायाः– ,, ,, ,,

(४२) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में भ्यस् (पञ्चमी बहुवचन) में और आम् (षष्ठी बहुवचन) के स्थान में हु आदेश होता है।[४] यथा–

वयंसिअहु < वयस्याभ्यः; अथवा वयस्यानाम्–हु प्रत्यय हुआ है।

अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में सप्तमी एकवचन में हि आदेश होता है।[५] यथा–

महिहि < मह्याम्।

(४३) अपभ्रंश में नपुंसकलिंग में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में इं आदेश होता है।[६] यथा–

कमलइं < कमलानि।

(४४) अपभ्रंश में नपुंसक लिंग में वर्तमान कान्त–जिसके अन्त में अ सहित क हो, शब्दों से पर में आने वाले प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के एकवचन में उं आदेश होता है।[७] यथा–

तुच्छउं < तुच्छकम्; भग्गउं < भग्नकम्।

(४५) अपभ्रंश में अकारान्त सर्वादि शब्दों को पञ्चमी के एकवचन में हां आदेश होता है।[८] यथा–

---

१. भिस्सुपोहिं ८/४।३४७।
२. स्त्रियां जस्-शसोरुदोत् ८।४।३४८।
३. ङस्-ङ्स्योर्हे च ८।४।३५०।
४. भ्यसामोर्हुः ८।४।३५१।
५. ङेर्हि ८।४।३५२।
६. क्लीबे जस्-शसोरिं ८।४।३५३।
७. कान्तस्यात उं स्यमोः ८।४।३५४।
८. सर्वादेङसेर्हां ८।४।३५५।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

जहां होन्तउ आगदो, तहां होन्तउ आगदो < यस्मात् भवान् आगतः, तस्मात्, भवान् आगतः।

कहां < कस्मात्।

(४६) अपभ्रंश में अकारान्त क (किम्) शब्द से पञ्चमी के एकवचन में इहे आदेश होता है और क के अकार का लोप होता है।[१] यथा–

किहे < कस्मात्; कहाँ < कस्मात्।

(४७) अपभ्रंश में अकारान्त सर्वादि शब्दों से सप्तमी के एकवचन में ङि के स्थान में हिं आदेश होता है।[२] यथा–

जहिं < यस्मिन्, तहिं < तस्मिन्, एक्कहिं < एकस्मिन्।

(४८) अपभ्रंश में य, त, क (यद्, तद्, किम्) शब्दों को षष्ठी के एकवचन में आसु आदेश होता है।[३] यथा–

जासु < यस्य, तासु < तस्य, कासु < कस्य।

(४९) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में या, ता, का (यद्, तद्, किम्) से षष्ठी के एकवचन में अहे आदेश और आ का लोप भी होता है।[४] यथा–

जहे केरउ < यस्याः कृते; तहे केरउ < तस्याः कृते; कहे केरउ < कस्याः कृते।

(५०) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में यद् और तद् के स्थान में क्रमशः धुं, और त्रं विकल्प से आदेश होते हैं।[५] यथा–

प्रंगणि चिट्ठदि नाहु धुं, त्रं रणि करदि न भ्रंति–प्राङ्गणे तिष्ठति नाथः यद्, तद् रणे करोति न भ्रान्तिम्।

(५१) अपभ्रंश में नपुंसकलिंग में इदं शब्द के स्थान में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में इमु आदेश होता है।[६] यथा–

इमु कुलु तुह तणउँ; इमु कुलु देक्खु < इदं कुलं।

(५२) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में एतद् शब्द के स्त्रीलिंग में एह, पुंल्लिङ्ग में एहो और नपुंसकलिंग में एहु रूप होते हैं।[७] यथा–

एह कुमारी < एषा कुमारी, एहो नरु < एष नरः; एहु मणोरह-ठाणु < एतन्मनोरथस्थानम्।

---

१. किमो डिहे वा ८।४।३५६।
२. ङेर्हिं ८।४।३५७।
३. यत्तत्किंभ्यो ङसो डासुर्न वा ८।४।३५८।
४. स्त्रियां डहे ८।४।३५९।
५. यत्तदः स्यमोर्धुं त्रं ८।४।३६०।
६. इदम इमुः क्लीबे ८।४।३६१।
७. एतदः स्त्री-पुं-क्लीबे एह एहो एहु ८।४।३६२।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(५३) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में अदस् शब्द के स्थान में ओइ आदेश होता है। यथा–

ओइ < अमूनि।

(५४) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में एतद् शब्द के स्थान पर एइ आदेश होता है। यथा–

एइ पेच्छ < एतान् प्रेक्षस्व।

(५५) अपभ्रंश में इदम् शब्द के स्थान पर आय आदेश होता है। यथा–

आयइं < इमानि; आयेण < एतेन; आयहो < अस्य।

अपभ्रंश में सर्व शब्द के स्थान में विकल्प से साह आदेश होता है। यथा–

साहु वि लोउ. सव्वु वि लोउ < सर्वोऽपि लोकः।

(५६) अपभ्रंश में किम् शब्द के स्थान में विकल्प से काइं और कवण आदेश होते हैं। यथा–

काइं न दूरे देक्खइ < किं न दूरे पश्यति।

ताहँ पराई कवण घृण < तयोः परकीया का घृणा।

किं गज्जहि खल मेह < किं गर्जसि खल मेघः।

पुल्लिंग अकारान्त शब्दों में जोड़े जाने वाले विभक्ति–प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प.	उ, ओ, ०	०
वी.	उ, ०	०
त.	ए, एं, ण	हिं
च.	सु, स्सु, हो, ०	हं, ०
पं.	हु, हे	हुँ
छ.	सु, स्सु, हो, ०	हं, ०
स.	इ, ए	हिं
सं.	उ, ०	हो, ०

देव शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	देवु, देवो, देव	देव, देवा
वी.	देवु, देव, देवा	देव, देवा
त.	देवें, देवे, देवेण	देवहिं, देवेहिं
च.	देव, देवसु, देवस्सु, देवहो	देवहं

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पं.	देवहे, देवहु	देवहुँ
छ.	देव, देवसु, देवहो, देवस्सु	देव, देवहं
सं.	देवे, देवि	देव, देवा, देवहो

वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	वीरु, वीरो वीर, वीरा	वीर, वीरा
वी.	वीरु, वीर, वीरा	वीर, वीरा
त.	वीरेण, वीरेणं, वीरें	वीरेहिं, वीराहिं, वीरहिं
च. छ.	वीरसु, वीरस्सु, वीरासु, वीराहो, वीरहो, वीर, वीरा	वीराहं; वीरह, वीर, वीरा
पं.	वीराहु, वीरहु, वीराहे, वीरहे	वीराहुं, वीरहुँ
स.	वीरि, वीरे	वीराहिं, वीरहिं
सं.	वीरु, वीरो वीर, वीरा	वीराहो, वीरहो, वीर, वीरा

पुल्लिंग इकारान्त और उकारान्त शब्दों के विभक्ति-प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प.	०	०
वी.	०	०
त.	एं, ण, म्	हिं
च.	०	हुं, हं
पं.	हे	हुँ
छ.	०	०, हुं, हं
स.	हि	हिं, हुं
सं.	०	हो, ०

इसि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प., वी.	इसि, इसी	इसि, इसी
त.	इसिण, इसिणं, इसीण, इसीणं इसिएं, इसीएं, इसिं, इसीं	इसिहिं, इसीहिं

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

च. छ.	इसि, इसी	इसिहुं, इसीहुं, इसिहं, इसीहं
पं.	इसिहे, इसीहे	इसिहुं, इसीहुं
स.	इसिहि, इसीहि	इसिहिं, इसीहिं, इसिहुं, इसिहो, इसीहो
सं.	इसि, इसी	इसि, इसी

गिरि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प., वी.	गिरि, गिरी	गिरि, गिरी
त.	गिरिएँ, गिरिण, गिरिं	गिरिहिं, गिरीहिं
च., छ.	गिरि, गिरी	गिरीहिं, गिरिहं, गिरिहुं, गिरीहुं
पं.	गिरिहे, गिरीहे	गिरिहुं, गिरीहुं
स.	गिरिहि, गिरीहि	गिरीहुं, गिरिहुं, गिरिहिं
सं.	गिरि, गिरी	गिरि, गिरी, गिरिहो

उकारान्त भाणु शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	भाणु, भाणू	भाणु, भाणू
वी.	,, ,,	,, ,,
त.	भाणुण, भाणुणं, भाणूण भाणूणं, भाणुएं, भाणूएं, भाणुं, भाणूं	भाणुहिं, भाणूहिं
च., छ.	भाणु, भाणू	भाणुहुं, भाणूहुं, भाणुहं, भाणूहं
पं.	भाणुहे, भाणूहे	भाणुहुं, भाणूहुं
स.	भाणुहि, भाणूहि	भाणुहिं, भाणूहिं, भाणुहुं, भाणूहुं
सं.	भाणु, भाणू	भाणुहो, भाणूहो, भाणु, भाणू

स्त्रीलिंग शब्द

स्त्रीलिंग में प्रायः दीर्घ ईकारान्त शब्द ह्रस्व हो जाते हैं। ऋकारान्त शब्द उकारान्त हो जाते हैं और देव शब्द के समान उनके रूप बनते हैं।

स्त्रीलिंग के विभक्तिचिह्न

	एकवचन	बहुवचन
प.	०	०, उ, ओ
वी.	०	,, ,,
त.	ए	हिं

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

च.,छ.	हे	हु
पं.	हे	हु
स.	हि	हिं
सं.	०	०, हो।

माला शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प., वी.	माला, माल	मालाउ, मालाओ, माल, माला
त.	मालाए, मालए	मालाहिं, मालहिं
च.,छ.	मालाहे, मालहे, माला, माल	मालाहुं, मालहुं
पं.	मालाहे, मालत्तो, मालादो, मालादु, मालाहिंतो	मालाहु, मालहु, मालत्तो, मालादो, मालादु, मालाहिंतो, मालासुन्तो
स.	मालाहि, मालहि	मालाहिं, मालहिं
सं.	माला, माल	मालाहो, मालहो

मइ शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प., वी.	मइ, मई	मइउ, मईउ, मइओ, मईओ, मई, मई
त.	मइए, मईए	मईहिं, मईहिं
च.,छ.	मइहे, मईहे, मइ, मई	मइहु, मईहु, मइ, मई
पं.	मइहे, मईहे	मइहु, मईहु
स.	मइहि, मईहि	मइहिं, मईहिं
सं.	मइ, मई	मइ, मई

पइट्ठी < प्रविष्टा

	एकवचन	बहुवचन
प., बी.	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठिउ, पइट्ठीउ, पइट्ठिओ, पट्ठीओ, पइट्ठीओ, पइट्ठी, पइट्ठि पइट्ठी, पइट्ठि
त.	पइट्ठिए, पइट्ठीए	पइट्ठिहिं, पइट्ठीहिं
च. छ.	पइट्ठिहे, पइट्ठीहे, पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठिहु, पइट्ठीहु, पइट्ठी, पइट्ठि
पं.	पइट्ठिहे, पइट्ठीहे	पइट्ठिहु, पइट्ठीहु
स.	पइट्ठिहि, पइट्ठीहिं,	पइट्ठिहिं, पइट्ठीहिं
सं.	पइट्ठि, पइट्ठी	पइट्ठिहो, पइट्ठीहो, पइट्ठी, पइट्ठि

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

धेणु < धेनु

	एकवचन	बहुवचन
प.	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ धेणुओ, धेणूओ
बी.	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ, धेणूओ, धेणु, धेणू
त.	धेणुए, धेणूए	धेणुहिं, धेणूहिं
च. छ.	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु
प.	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणुहु
स.	धेणुहि, धेणूहि	धेणुहिं, धेणूहिं
सं.	धेणु, धेणू	धेणुहो, धेणूहो

वहू < वधू

	एकवचन	बहुवचन
प., बी.	वहु, वहू	वहूउ, वहुउ, वहुओ, वहूओ
त.	वहुए, वहूए	वहुहिं, वहूहिं
च. छ.	वहुहे, वहूहे	वहुहु, वहूहु
प.	वहुहे, वहूहे	वहुहु, वुहूहु
स.	वहुहि, वहूहि	वहुहिं, वहूहिं
सं.	वहु, वहू	वहुहो, वहूहो

नपुंसकलिंग के विभक्ति चिह्न

	एकवचन	बहुवचन
प.	०	०, इं
बी.	०	०, इं

शेष विभक्तिचिह्न पुंल्लिङ्ग के समान होते हैं।

कमल शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प.	कमलु, कमला, कमल	कमलाइं, कमलइं
बी.	कमलु, कमला, कमल	कमलाइं, कमलइं

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

हलन्त शब्द अपभ्रंश में नहीं होते। अतः उनके स्थान पर अजन्त हो जाते हैं। अन्तिम हल् होने से प्रायः हलन्त शब्द अकारान्त होते हैं।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

सर्वनाम (Pronoun)

सव्व < सर्व—सब (अन्य पुरुष या प्रथम पुरुष)

	एकवचन	बहुवचन
प.	सव्वु, सव्वो, सव्व	सव्वे, सव्व, सव्वा
वी.	सव्वु, सव्व, सव्वा	सव्व, सव्वा
त.	सव्वें, सव्वेण	सव्वेहिं
च., छ.	सब्बसु, सव्वस्सु, सव्वहो	सव्वहं, सव्व, सव्वा
पं.	सव्वहां, सव्वाहां	सव्वहुं, सव्वाहुं
स.	सव्वहिं	सव्वहिं

सव्व के स्थान पर अपभ्रंश में साह आदेश होता है। अतः साह शब्द के रूप भी अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के समान बनते हैं।

तुम < युष्मद्

	एकवचन	बहुवचन
प.	तुहुं	तुम्हे, तुम्हइ
वी.	पइं, तइं	तुम्हे, तुम्हइ
त.	पइं, तइं	तुम्हेहि
च., छ.	तउ, तुज्झ, तुध्र (तुहु)	तुम्हहं
पं.	तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं
स.	पइं, तइं	तुम्हासु

अहं < अस्मद्

	एकवचन	बहुवचन
प.	हउं	अम्हे, अम्हइं
वी.	मइं	अम्हे, अम्हइं
त.	मइं	अम्हेहिं
च., छ.	महु, मज्झु	अम्हहं
पं.	महु, मज्झु	अम्हहं
स.	मइं	अम्हासु

एह < एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प.	एहो	एहू
वी.	,,	,,

शेष रूप सव्व के समान होते हैं।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

जो < यत्—सम्बन्धी सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
प.	जु, जो	जे
वी.	जं	जे
त.	जेण, जिं, जें	जेहिं
च.,छ.	जासु, जसु, जस्स, जहो, जहे	जाहं, जाह
पं.	जउ, जहे	जहु
स.	जहिं, जम्मि	जहिं

सो < तद्—वह—निर्देशवाचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
प.	सो, सु, स	ते
वी.	तं	ते
त.	तेण, तइं, तें, तिं	तेहि, ताहँ, तेहिं
च., छ.	तासु, तहो, तहि, तसु	तहु
पं.	तहे, तउ	तहु
स.	तहिं, तहि	तहिं

क < किम्—क्या, कौन—प्रश्नवाचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
प., वी.	को, कु	के
त.	केण, कइं	केहिं
च.,छ.	कहो, कहु, कस्स, कासु	काहं
पं.	कउ, किहे, कहां	कहु
स.	कहि, कहिं	कहिं

कवण के रूप सव्व के समान होते हैं।

आय < इदम्—यह

	एकवचन	बहुवचन
प.	आयु, आयो, आय, आया	आये, आय, आया
बी.	आयु, आय, आया	आय, आया
त.	आयेण, आयेणं, आयें	आयेहिं, आयहिं, आयाहिं

शेष शब्दरूप सव्व के समान बनते हैं।

स्त्रीलिंग में सव्वा शब्द के रूप माला के समान होते हैं। एतद् शब्द के स्थान पर स्त्रीलिंग में एह आदेश होता है। अतः प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में एह और इन विभक्तियों के बहुवचन में एहउ, एहाऊ रूप बनते हैं।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

स्त्रीलिंग जा < यत्—जो

	एकवचन	बहुवचन
प.	जा	जाउ
वी.	जं	जाउ
त.	जाइं, जाएं, जिए	जेहिं
च., छ.	जाहि	जाहिं
पं.	जाहे	जाहिं
स.	जाहि	जाहिं

सा < तद्—वह

	एकवचन	बहुवचन
प.	सा, स	ताउ, ति
बी.	तं	ताउ
त.	तइं, तिए, ताए, तए	तेहि
च., छ.	तिहि, ताहि, तहे	ताहि
पं.	ताहँ, तहे	ताहिं
स.	ताहि, ताहिं	ताहिं

का < किम्—कौन, क्या ?

	एकवचन	बहुवचन
प., वी.	का, क	कायउ, काउ
त.	काइं, काए	केहि, काहि
च., छ.	काहिं, काहि	काहि
पं.	काहे	काहिं
स.	काहिं	काहिं

नपुंसकलिंग—सव्व

	एकवचन	बहुवचन
प., वी.	सव्व, सव्वु, सव्वा	सव्वाइं, सव्वइं

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

ज < यत्

	एकवचन	बहुवचन
प.	जं, ध्रुं	जाइं
वी.	जं, जु	जाइं

शेष रूप पुल्लिंग के समान होते हैं।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

स < तद्

	एकवचन	बहुवचन
प.	तं, तु	ताइं
वी.	तं, त्रं	ताइं

शेष रूप पुंल्लिङ्ग के समान बनते हैं।

क < किम्

	एकवचन	बहुवचन
प. वी.	किं	काइं

अवशेष रूप पुल्लिंग के समान होते हैं।

इदम्

	एकवचन	बहुवचन
प., वी.	इमु	आयाइं, आयइं

सर्वनाम शब्दों से निष्पन्न विशेषण

परिणामवाचक

जेवडु, जेत्तुल–जितना केवडु, केत्तुल–कितना
तेवडु, तेत्तिल–उतना एवडु, एत्तुल–इतना

गुणवाचक

जइसो, जेहु–जैसा तइसो, तेहु–तैसा
कइसो, केहु–कैसा अइसो, एहु–ऐसा

सम्बन्धवाचक

एरिस–इस जैसा तुम्हारिस–तुम्हारे जैसा
हम्हारिस–हमारा जैसा तुम्हार < तुम्हारा

रीतिवाचक

जेम, जिम, जिह, जिध–जिस प्रकार केम, किम, किह, किध–किस प्रकार
तेम, तिम, तिह, तिध–तिस प्रकार

अव्यय

स्थानवाचक अव्यय

एत्थु–यहाँ जेत्थु, जत्तु–जहाँ
तेत्थु, तत्तु–तहाँ केत्थु–कहाँ
एत्तहे–तेत्तहे–यहाँ–वहाँ केत्तहे–कहाँ
तेत्तहे–वहाँ

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

समयवाचक अव्यय

जामाहिं, जाम, जाउं–जब तक तामहिं, ताम, ताउं–तब तक
तो–तबसे

अन्य अव्यय

अन्न, अन्नह < अन्यथा–	अन्य प्रकार से।
अवसें < अवशेन	वश में न होने से।
अवस < अवश्यम्	अवश्य ही।
अहवइ < अथवा	
आहरजाहर, ऐहिरेयाहिरे–	
एम्बहि < इदानीम्	इस समय।
उट्ठवइस < उत्तिष्ठविश	उठने का इच्छुक।
इक्कसि < एकशः	एक बार।
एत्तहे < अत्र	यहाँ
एत्तहे < इतः	यहाँ से अथवा वाक्यारम्भ के लिए।
जि	जिससे।
एम्व < एवं	इस प्रकार, ऐसे या वाक्य जोड़ना।
एम्वइ < एवं	,, ,,
कहंतिहु < कुतः	कहाँ से।
किह, किध < कथम्	क्यों या किस तरह।
किर < किल	किल, निश्चय।
केत्थु < कुत्र	कहाँ।
केहिं	तादर्थ्य बतलाने के लिए या किसके।
खाइं	निरर्थक वाक्य पूर्ति के लिए।
घइं	,, ,,
घुग्घ	चेष्टा का अनुकरण करने में।
छुडु < यदि	जो।
जणि, जणु	जानना या इव की सूचना के लिए।
जेत्थु, जत्तु < यत्र	जहाँ।
जेम, जिम, जेम्ब, जिम्ब < यथा	जैसा।
जिह, जिध	
जाम, जाउं, जामहि < यावत्	जब तक।
तणेण	तादर्थ्य की सूचना के लिए।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

तेम, तेम्ब, तिम, तिम्ब < तथा तिह, तिध	इसी प्रकार, वैसे।
ताउं, ताम, तामहिं < तावत्	तब तक।
तेत्थु, तत्तु, तेहिं < तत्र	वहाँ
तो < ततः, तदा	अनन्तर, तब।
दिवे < दिवा	दिवस।
ध्रुवु < ध्रुवम्	निश्चय।
नउ, नाइ, नावइ, नं	जानने के अर्थ में।
नाहिं < नहि	निषेध अर्थ में, इवार्थ में।
पच्चलिउ < प्रत्युत	इसके विपरीत।
पच्छइ < पश्चात्	पीछे।
पर < परम्	परन्तु।
अवरोप्परं, अवरुप्परं < परस्परम्	आपस में।
पाडिक्कं, पाडिएक्कं < प्रत्येकम्	एक-एक।
प्राउ, प्राइव, प्राइम्ब, पग्गिम्ब < प्रायः	प्रायः, बहुधा।
पुणु < पुनः	फिर।
मणाउं < मनाक्	थोड़ा।
मं < मा	निषेधार्थक, मत।
रेसि, रेसिं	तादर्थ्य बतलाने के लिए।
वहिल्ल < शीघ्रम्	शीघ्र।
विणु < विना	बिना।
समाणुं < समानम्	समान।
सव्वेत्तहे < सर्वत्र	सब जगह।
हुहुरु	आवाज करना।

तद्धित

(५७) अपभ्रंश में संज्ञा से परे स्वार्थ में अ, अड और उल्ल प्रत्यय होते हैं और स्वार्थिक क प्रत्यय का लोप होता है।[१] स्त्रीलिंग बनाने के लिए ई प्रत्यये जोड़ा जाता है।[२] यथा–

पथिउ–अ प्रत्यय जोड़ा गया है–

१. अ-डड-डुल्लाः स्वार्थिक-क-लुक् च ८।४।४२९।

२. स्त्रियां तदन्ताड्डीः च ८।४।४३१।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

बे दोसडा < द्वौ दोषौ–यहाँ अड प्रत्यय हुआ है।

कुडुल्ली < कुण्डलिनी–उल्ल प्रत्यय हुआ है।

हिअडउं–अड + अ प्रत्यय जोड़ा गया है।

चुडुल्लउ–उल्ल + अ ,, ,,

बलुल्लडा–उल्ल + अड ,, ,,

गोरड + ई–गोरडी–स्त्रीलिंग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा है।

(५८) अपभ्रंश में भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए त्व और तल प्रत्यय के स्थान में प्पणु और त्तणु प्रत्यय जोड़े जाते हैं।[१] त्तणु का त्तण भी हो जाता है। यथा–

बड्डुप्पणु, बड्डुत्तणु, बड्डुत्तणहो < महत्त्वम्–बड़प्पन।

स्त्रीलिंग बनाने के लिए अपभ्रंश में आ और ई प्रत्यय में से कोई एक प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा–

गोरडी, धूलडिआ।

क्रियारूप

(५९) अपभ्रंश में संस्कृत की व्यञ्जनान्त धातु में अ प्रत्यय जोड़ कर रूप बनाये जाते हैं। यथा–

कह् + अ + इ = कहइ–अ विकरण के रूप में जोड़ा गया है।

पढ् + अ + ई = पढइ– ,, ,,

(६०) उकारान्त धातुओं को उव, ईकारान्त को ए और ऋकारान्त धातुओं में ऋ स्वर को अर होता है। कुछ धातुओं में उपान्त्य स्वर को दीर्घ भी हो जाता है। यथा–

सु–सुवइ–सु = स + उव + इ = सुवइ–सोता है।

नी–नेइ–न + ए + इ = नेइ–ले जाता है।

कृ–करइ–क् + अर् + इ = करइ–करता है।

हृ–हरइ–ह् + अर + इ = हरइ–हरता है।

तुष्–तूसइ–उपान्त्य स्वर उकार को दीर्घ हुआ है।

पुष्–पूसइ– ,, ,,

(६१) अपभ्रंश में कुछ धातुओं में एक स्वर का दूसरा स्वर हो जाता है। यथा–

चिन्–चुनइ–चिनइ–चुनता है। इकार को उकार हुआ है।

(६२) अपभ्रंश की कुछ धातुओं में धातु के अन्तिम व्यञ्जन को द्वित्व हो। जाता है। यथा–

---

१. त्व-तलोः प्पणः ८।४।४३७।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

फुट्–फुट्टइ–फूटता है। यहाँ ट को द्वित्व हुआ है।

तुट्–तुट्टइ–तोड़ता है। ,, ,,

लग–लग्गइ–लगता है। ग को द्वित्व हुआ है।

कुप्–कुप्पइ–कुपित होता है। प को द्वित्व हुआ है।

(६३) अपभ्रंश में प्राकृत के समान संस्कृत के द्य के स्थान पर ज्ज होता है। यथा–

संपज्जइ < संपद्यते–संपादित होता है।

खिज्जइ < खिद्यते–खिन्न होता है।

(६४) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल के प्रथमपुरुष बहुवचन में विकल्प से हिं प्रत्यय जोड़ा जाता है।[१] यथा–

सहहिं < शोभन्ते।

करहिं < कुरुतः।

(६५) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल के मध्यम पुरुष एकवचन में विकल्प से हि आदेश होता है। यथा–

रुअहि < रोदिषि–हि प्रत्यय जोड़ा गया है।

लहहि < लभसे– ,, ,,

(६६) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल के मध्यम पुरुष बहुवचन में विकल्प से हु आदेश होता है। यथा–

इच्छहु < इच्छथ–हु प्रत्यय जोड़ा गया है।

(६७) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल उत्तमपुरुष एकवचन में विकल्प से उं प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा–

कड्ढउं < कर्षामि–उं प्रत्यय जोड़ा है। विकल्पाभाव में–कड्ढामि।

(६८) अपभ्रंश में धातु से पर में आने वाले वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष बहुवचन में विकल्प से हुं आदेश होता है। यथा–

लहहुं < लभामहे; जाहुं < यामः, वलाहुं < वलामहे।

(६९) अपभ्रंश में हि और स्व के स्थान पर इ, उ और ए ये तीनों आदेश होते हैं। यथा–

सुमरि < स्मर; मेल्लि < मुञ्च; विलम्बु < विलम्बस्व; करे < कुरु।

(७०) अपभ्रंश में भविष्यत्काल में स्य के स्थान में स विकल्प से आदेश होता है। यथा–

होसइ, पक्ष में होहिइ < भविष्यति।

---

१. त्यादेराद्यत्रयस्य सम्बन्धिनो हिं न वा ८।४।३८२

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अपभ्रंश का धात्वादेश

धातु	आदेश	उदाहरण
भू	हुच्च	अहरि पहुच्चइ नाहु < अधरे प्रभवति नाथः।
ब्रू	ब्रुव	बुवह सुहासिउ किंपि < ब्रूत सुभाषितम् किञ्चित्।
ब्रू	ब्रोप्प	ब्रेप्पिणु < उक्त्वा।
व्रज	वुञ	वुञइ, वुञेप्पि, वुञेप्पिणु।
दृश	प्रस्स	प्रस्सदि।
ग्रह	गृण्ह	पढ गृण्हेप्पिणु व्रतु < पठ गृहीत्वा व्रतम्।
तक्ष	छोल्ल	ससि छोल्लिज्जन्तु < शशी अतिक्षिष्यत।
तापि	झल्लक	सासानलजाल झलक्किअउ < श्वासानलज्वाला सन्तापितम्।
शल्याय	खुडुक्क	हिअइ खुडुक्कइ < हृदयं शल्यायते।
गर्ज	घुडुक्क	घुडुक्कइ मेहु < गर्जति मेघः।
बंच	वंचइ	जाता है।
भज्ज	भज्जइ	भग्न करता है।
धुट्ठु	धुट्ठुअइ	व्यर्थ शब्द करता है।

क्रियाओं में जुड़ने वाले प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	इ, ए	हिं
म. पु.	हि	हु
उ. पु.	उं	हुं

आज्ञार्थ एवं विध्यर्थक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	उ	हुं
म. पु.	इ, उ, ए	हु
उ. पु.	उ	उं

भविष्यत्काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	इ	हिं
म. पु.	हि, सि	हु, हो
उ. पु.	मि, मो	हुँ

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

कर धातु के रूप

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	करइ, करेइ	करहिं, करन्ति
म. पु.	करहि, करसि	करहु, करह
उ. पु.	करिमि, करउं	करहुं, करिमु

आज्ञार्थ एवं विध्यर्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	करिज्जउ	करिज्जंतु, करिज्जहुं
म. पु.	करिज्जहि, करिज्जइ	करिज्जहु
उ. पु.	करिज्जउ	किज्जउ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	करेसइ, करेहइ	करेसहिं, करेहिंति
म. पु.	करेसहि, करेससि, करिहिसि	करेसहु, करेसहो
उ. पु.	करेसमि, करीहिमि, करिसु	करेसहुँ

भूतकाल के लिए भूतकृदन्त का ही प्रयोग होता है। यथा–

गयं < गतम्, कियं < कृतम्, पइट्ठं < प्रतिष्टितम्।

कर्मणि प्रयोग के लिए इज्ज या इय प्रत्यय जोड़कर रूप बनाये जाते हैं।

इज्ज–गणिज्जइ, कहिज्जइ, वण्णिज्जइ।

इय–फिट्टियइ, वण्णियइ।

कृदन्त

(७१) वर्तमान कृदन्त अंत और माण प्रत्यय जोड़कर बनाया जाता है। अंत प्रत्यय परस्मैपद में और माण प्रत्यय आत्मनेपद में जुड़ता है। यथा–

अंत–डज्झ + अंत = डज्झंत–परस्मैपद में।

सिंच + अंत = सिंचंत– ,,

कर + अंत = करंत– ,,

पइस + अंत = पइसंत– ,,

वज्ज + अंत = वज्जंत– ,,

उग्गम + अंत = उग्गमंत– ,,

माण–पविस्स + माण = पविस्समाण–आत्मनेपद में।

वट्ट + माण = वट्टमाण– ,,

भण + माण = भणमाण– ,,

हुच्च + माण = हुच्चमाण– ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

भूतकृदन्त

(७२) भूतकालिक कृदन्त बनाने के लिए अ, इअ, और इय प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा–

अ–हु + अ = हुअ, मुक्क + अ = मुक्क, ग + अ = गअ।

इअ–गाल + इअ = गालिअ, भक्ख + इअ = भक्खिअ।

इय–कह + इय = कहिय, छड्ड + इय = छड्डिय, उप्पड + इय = उप्पडिय।

सम्बन्धक कृदन्त

(७३) पूर्वकालिक क्रिया या सम्बन्धक कृदन्त के लिए संस्कृत में क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय होते हैं। अपभ्रंश में पूर्वकालिक क्रिया के लिए निम्न आठ प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

इ–लह + इ = लहि < लब्ध्वा।

इउ–कर + इउ = करिउ < कृत्वा।

इवि–कर + इवि = करिवि < कृत्वा।

अवि–कर + अवि = करवि < कृत्वा।

एप्पि–कर + एप्पि = करेप्पि < कृत्वा।

एप्पिणु–कर + एप्पिणु = करेप्पिणु < कृत्वा।

एविणु–कर + एविणु = करेविणु < कृत्वा।

एवि–कर + एवि = करेवि < कृत्वा।

हेत्वर्थ कृदन्त

(७४) क्रियार्थक क्रिया या हेत्वर्थ कृदन्त के लिए अपभ्रंश में निम्न आठ प्रत्यय जोड़ने से रूप बनाये जाते हैं। संस्कृत में यह कार्य तुमुन् प्रत्यय से और हिन्दी में 'ना' प्रत्यय लगाकर चलाया जाता है। यथा–

एवं– चय + एवं = चएवं < त्यक्तुम्–छोड़ना।
दा + एवं + देवं < दातुम्–देना

अण– भुंज + अण = भुंजण < भोक्तुम्–भोगना।
कर + अण = करण < कर्तुम्–करना।

अणहं– सेव + अणहं = सेवणहं < सेवितुम्–सेवना।
भुंज + अणहं = भुंजणहं < भोक्तुम्–भोगना।

एप्पि– कर + एप्पि = करेप्पि < कर्त्तुम्–करना।
जि + एप्पि = जेप्पि < जेतुम्–जीतना।

एप्पिणु– कर + एप्पिणु = करेप्पिणु < कर्तुम्–करना।
चय + एपिणु = चएप्पिणु < त्यक्तुम्–छोड़ना।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

एवि– कर + एवि = करेवि < कर्तुम्–करना।
पाल + एवि = पालेवि < पालयितुम्–पालना।
एविणु– कर् + एविणु = करेविणु < कर्तुम्–करना।
ला + एविणु = लेविणु < लातुम्–लाना।

विध्यर्थ कृदन्त

(७५) अपभ्रंश में 'चाहिए' या किसी विधिविशेष के लिए इएव्वउ, एव्वउं एवं एवा प्रत्यय जोड़े जाते हैं। संस्कृत में जिस अर्थ में तव्य प्रत्यय जोड़ा जाता है या हिन्दी में 'चाहिए' जोड़ते हैं, उसी अर्थ में उक्त प्रत्यय लगाये जाते हैं। यथा–

इएव्वउं– कर + इएव्वउं = करिएव्वउं < कर्तव्यम्।
मर + इएव्वउं = मरिएव्वउं < मर्तव्यम्।
सह + इएव्वउं = सहिएव्वउं < सोढव्यम्।
एव्वउं– कर + एव्वउं = करेव्वउं < कर्तव्यम्।
मर + एव्वउं = मरेव्वउं < मर्तव्यम्।
सह + एव्वउं = सहेव्वउं < सोढव्यम्।
एवा– कर + एवा = करेवा < कर्तव्यम्।
मर + एवा = मरेवा < मर्तव्यम्।
सह + एवा = सहेवा < सोढव्यम्।
सो + एवा = सोएवा < स्वप्तव्यम्।
जग्ग + एवा = जग्गेवा < जागरितव्यम्।

शीलार्थक

(७६) संस्कृत में शीलधर्म को बतलाने के लिए तृ प्रत्यय लगाया जाता है; यहाँ अपभ्रंश में शील, स्वभाव और साध्वर्थ में अणअ प्रत्यय जोड़ा जाता है।

अणअ– हस + अणअ = हसणअ–हसणउ–हसनशील।
भस + अणअ = भसणअ–भसणउ–भौंकनेवाला।
कर + अणअ = करणअ–करणउ–करनेवाला।
मार + अणअ = मारणअ–मारणउ–मारनेवाला।
वज्ज + अणअ = वज्जणअ–वज्जणउ–वादनशील।

क्रियाविशेषण

वहिल्लउ–शीघ्र, निच्चट्टु–प्रगाढ, कोड्डु–कौतिक, ढक्करि–अद्भुत, दड़वड़–शीघ्र एवं जुअंजुअ–अलग-अलग आदि है।

विट्ठालु–नीच संसर्ग, अप्पणु–आत्मीय, सड्ढलु–असाधारण, रवण्ण–सुन्दर, नालिअ, वढ–मूर्ख और नवख–नया-विचित्र आदि विशेषण भी अपभ्रंश में उपलब्ध हैं।

❑ ❑ ❑

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY